

ISSN 2277-534X

शोध-समीक्षा का त्रैमासिक प्रकाशन

साहित्य प्रभा

आर एन.आई-UA- UTTHIN/2002/6511

वर्ष-17

अंक- 02

अप्रैल-जून 2018

सहयोग राशि : 15 रुपये

उत्तराखण्ड की
मनभावन वादियाँ





अप्रैल-जून 2018

साहित्यप्रभा-साहित्यिक त्रैमासिक

वर्ष : 17

अंक : 02

- ★ आशीर्वाद (ब्रह्मलीन) > स्वामी भास्करानन्द पुरी जी महाराज
- ★ संरक्षक > पद्मश्री डॉ० श्याम सिंह 'शशि'
> डॉ. योगेन्द्र नाथ शर्मा 'अरूण'
- ★ प्रधान सम्पादक > डॉ. चन्द्र सिंह तोमर 'मयंक'
- ★ उप सम्पादक > राखी सजवाण
> रूपेश तोमर
- ★ सम्पादकीय सहयोग > डॉ. सुरेश महेश्वरी (जलगाँव)
> डॉ. पीताम्बर अवस्थी (पिथौरागढ़)
> डॉ. अवधेश चन्सौलिया, (ग्वालियर)
✓ > डॉ. (श्रीमती) मनिका शङ्किया (असम)
> पवनेश ठकुराठी 'पवन' (अल्मोड़ा)
- ★ कम्प्यूटर डिजाईनिंग > दीक्षा शर्मा
- ★ विधि परामर्शी > एस.सी. विरमानी, एडवोकेट
> सत्य नारायण सक्सेना (एडवोकेट)
> अरूण सक्सेना (एडवोकेट)

स्वन्वाधिकारी, सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. चन्द्र सिंह तोमर 'मयंक' द्वारा सरस्वती प्रेस, 6 फालतू लाइन, देहरादून से मुद्रित और आमवाला (अपर) पो. तपोवन (नालापानी) देहरादून से प्रकाशित।

EDITORIAL-CORRESPONDANCE

Dr. Chandra Singh Tomar 'Mayank'
Amwala (Upper) P.O. Tapovan
(Nalapani) Dehradun-248008 (India)
Ph : 9411575129.

E-Mail: editor_sahityaprabha@rediffmail.com

पंजी. संख्या : UTT/HIN/2002/6511

पत्रिका में छपी सामग्री पर सम्पादक की सहमति होना जरूरी नहीं। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र देहरादून होगा। पत्रिका में सभी पद अवैतनिक हैं।

इस अंक में.....

विषय वस्तु	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
• सम्पादक मण्डल	• विषय सूची	• 01
• सम्पादकीय	• सम्पादक की कलम से	• 02
• फिर मिला खत आपका	• पत्र में (पाठकों के पत्र)	• 03
• डॉ. नगेन्द्र का सुलभ	• डॉ. रमा नाथ त्रिपाठी	• 4-8
• समकालीन हिंदी	• डॉ. पंडित बने	• 9-11
• मध्य प्रदेश में उच्च शिक्षा	• डॉ. शरद नारायण खरे	• 12-13
• हिन्दी काव्य में संवदेना	• डॉ. अवधेश चन्सौलिया	• 14-15
• समकालीन असमिया	• डॉ. मनिका शङ्किया ✓	• 16-19
• साहित्य में प्रकृति	• डॉ. अर्चना रानी	• 20-22
• असमिया कविता में..	• असीम दास	• 23-24
• असम की विभिन्न..	• प्रशांत लस्कर	• 25-26
• विष्णु ध्वजा की...	• संदीप बड़ोनी	• 27-31
• प्राकृतिक संपदा के ..	• पवनेश ठकुराठी 'पवन'	• 32-34
• संचार, इन्टरनेट एवं	• ललित चंद्र जोशी	• 35-40
• डॉ. मयंक की	• पवनेश ठकुराठी 'पवन'	• 41-45
• उत्तराखण्ड के लोकगीत..	• डॉ. सत्यानंद बड़ोनी	• 46-48
• सर्वाभौम साहित्य शास्त्र	• डॉ. पशुपतिनाथ उपाध्याय	• 49-50
• माटी के रंग निबन्ध	• डॉ. अरूण कुमार आर्य	• 51-52

सहयोग राशि

मात्र संस्थागत (Bulk) में one year-	Rs. 160/-
पांच वर्षीय (5 year)	Rs. 500/-
आजीवन (Life)	Rs. 1500/-
संरक्षक (Patron)	Rs. 10,000/-
विदेशों में आजीवन (Abroad)	US डॉलर \$ 40/-
नोट-	डाक खर्च आदि एक वर्ष के लिए रु. 100/- तथा पांच वर्ष के लिए रु. 200/- पंजीकरण शुल्क अनिवार्य रूप से सदस्यता राशि के साथ जोड़ा गया है। मात्र पांच वर्षीय अथवा आजीवन सहयोग राशि ही स्वीकार होगी। संस्थागत जो (Bulk) में एक सौ से अधिक पत्रिकाएं क्रय करेंगे उनके लिए एक वर्षीय शुल्क रु. 160/- प्रति सदस्य होगा। अतः सदस्यगण इसी आधार पर अपना नवीनीकरण अथवा सदस्यता गृहण करने की कृपा करें।

समस्त पाठकगण एवं साहित्यप्रभा परिवार से जुड़े सभी सुधीजनों/ प्रबुद्धजनों को बैसाखी पर्व, बुद्धपूर्णिमा गंगा दशहरा एवं उत्तराखण्ड के चारों धाम-दर्शन की अनंत मंगलकामनाएँ

-सम्पादक

समकालीन असमिया कथा- साहित्य में स्त्रीविमर्श

□डॉ. मनिका शङ्कीया, असम□

युगादर्श के साथ- साथ साहित्य का अनुभव भी बदलता रहता है समाज का दर्पण अगर साहित्य है, तो समाज के परिवर्तनों को साहित्य में ही देखा जा सकता है स्वातंत्र्योत्तर भारत में अनेकों परिवर्तन आए। वैज्ञानिक उपकरणों के बहुल प्रयोग अथवा दुनिया को मुट्ठी में देखने की सुविधा के कारण समाज की चिन्ताशक्ति, इच्छा, आदर्श मान्यताओं में भी द्रूत बदलाव आए। कथा साहित्य की गति-विधियों पर अगर विचार करें तो देखते हैं कि विषय वस्तु और शिल्पगत परिवर्तन के साथ-साथ चरित्र के सूक्ष्म परीक्षण भी हुए हैं। भारतीय समाज जो सदियों से पुरुष तांत्रिक चिन्ताधारा से परिचालित था, समय के परिवर्तन के साथ- साथ समाज का दूसरा पक्ष-स्त्री-शक्ति की चिन्ता धारा को भी स्वीकारने में विवश हुआ वस्तुतः यह समय की ही मांग थी कि समाज के उस अभिन्न अंग को भी समान मर्यादा दी जाए। स्त्री को केन्द्र में रखकर समाज, संस्कृति, परम्परा एवं इतिहास का पुनरीक्षण करते हुए स्त्री की स्थिति पर मानवीय दृष्टि से विचार करने की आवश्यकता जब से अनुभव की गयी, वहीं से स्त्री-विमर्श की शुरुआत हुई। संक्षेप में कहें तो स्त्री विमर्श स्त्रियों की चेतना प्रसार का आख्यान है। स्त्री विमर्श अभिधा बीसवीं सदी में शुरू हुई नवीन चिन्तन प्रक्रिया है। उत्तर आधुनिक दर्शन इसे आधार भूमि प्रदान करता है विमर्श का अर्थ है 'वितर्क' विचारना, तथ्यानुसंधान, विवेचना, आलोचना, युक्ति द्वारा परीक्षा करना, असंतोष, अधैर्य, अधीरता। ' विमर्श को अंग्रेजी में Discourse कहते हैं। जिसका अर्थ है वर्ण्य विषय का सुदीर्घ एवं गंभीर चिन्तन मनन करना। विमर्श में संवाद के जरिए अनेक लोगों की मान्यताओं को सम्मान के साथ सुना जाता है। और समय के स्रोत में नया स्वरूप ग्रहण करने के लिए छोड़ दिया जाता है। स्त्री-विमर्श के संदर्भ में यशवंती जी का कहना है "स्त्री विमर्श पुरुष का विरोधी नहीं; बल्कि उसका विरोध उस पितृ सत्तात्मक व्यवस्था से है जो कि हर स्तर पर स्त्री को पुरुषों से हीन-समझता है और उसके आगे बढ़ने के मार्ग को अवरुद्ध करता है।" 2

हिन्दी साहित्य में समकालीन अनेक कथाकारों ने अपने साहित्य में स्त्री की समस्याओं, आदर्शों अथवा संघर्षों को हुबहु आँकने का प्रयास किया है। चित्रा मुदगल, उषा प्रियंबदा, मनुभण्डारी, अनामिका, मैत्रेयी पुष्पा, मृदुला गर्ग, लवलीन, निरूपमा सेबती आदि महिला साहित्यकारों ने बड़े ही साहस पूर्वक समाज में सदियों

से चलती आ रही है परम्परागत मान्यताओं का खंडन करके स्त्री-अस्मिता को प्रतिष्ठापित करने का प्रयास किया है। स्त्री के अंदर अपार संभावनाएं, अपरिसीम शक्ति निहित है। पुरुषों के हाथों परिचालित स्त्री अपनी इच्छा-शक्ति, अपनी संभावनाओं, अपने अहं को दबा रखने में विवश तो है, लेकिन उचित समय आते ही सारी बाधाओं को तोड़ती हुई सामने आ जाती है। अपनी कथनी-करनी के माध्यम से विद्रोह करती है।

समकालीन असमिया कथाकारों ने भी सदियों से दबी- घूटी स्त्री-समाज की व्यथाओं को पारम्परिक दृष्टिकोण से देखने के स्थान पर पारिवारिक, सामाजिक प्रतिकूल अवस्था को लांघकार प्रतिगवादी नारी-सत्ता को प्रतिफलित किया है। मामनि रायसम गोस्वामी (इन्दिरा गोस्वामी) रीता चौधुरी, अरूपा पटंगीया कलिता, डॉ. ज्योति प्रसाद शङ्कीया, शिवानंद काकति, अनुराधा शर्मा पुजारी, मणि कुंतला भट्टाचार्य आदि कथाकारों ने नारी चरित्र को स्वकीयता प्रदान करने का सफल प्रयास किया है। इन्दिरा गोस्वामी के प्रायः उपन्यास तथा कहानियां स्त्री-जीवन की प्रतिबंधकता और उससे मुक्ति पाने की तड़पाहट लिए स्त्री का खुला प्रतिवादी स्वर का नवलेखन है। गोस्वामी द्वारा लिखित 'संस्कार' कहानी में पुत्रेच्छा रखनेवाला महाजन की नजर विधवा, ब्राह्मणी दमयंती पर पड़ती है। दमयंती भी महाजन के प्रलोभन में फँस जाती है एक ओर दारिद्र्य, पेट की ज्वाला और दूसरी ओर वैधव्य जीवन की यंत्रणा, दो बेटियों का बोझ। दमयंती महाजन की वासना का शिकार होकर उसकी संतान की माँ बनने वाली होती है लेकिन तभी दमयंती की स्त्री चेतना जाग्रत हो उठती है रूग्ण होने के कारण संतान जन्म न दे पाने के कारण महाजन विवश दमयंती को पुत्र- प्राप्ति का जरिया मात्र समझने वाला महाजन को योग्य प्रत्युत्तर देने का संकल्प लेकर गर्भस्थ संतान को बांसबारी में दफना देती है। एक विधवा ब्राह्मणी स्वार्थ पूर्ति हेतु पास आये महाजन की स्वार्थपूर्ति का पथ स्तब्ध कर देती है। आखिर शांडिल्य गोत्र की ब्राह्मण शुदिरीया' (शुद्र का) भुण क्यों धारण करेगी?

इन्दिरा गोस्वामी (1941-2011) द्वारा रचित एक बहु चर्चित उपन्यास दँताल हातीर उँये खोवा हाउदा (हाथी का दीमक लगा हाउदा-हाथी के ऊपरी बैठने के लिए लगाया गया आसन) का एक प्रतिवादी नारी पात्र है गिरिवाला। अति कम उम्र में ही विवाह हो

जा के बाद वह विधवा हो जाती है और मायके चली आती है। ब्राह्मण विधवा की मानवीय आशा-आकांक्षा, प्रेम-वासना और कठोर वैधव्य व्रत से गिरवाला का जीवन यातनादायक हो उठता है। लेकिन गिरवाला साहसी और प्रतिवादी चरित्र है चरित्रहीन मृत पति की स्मृति में ही अपना सुदीर्घ जीवन वह बीताना नहीं चाहती थी। वह जीवन को नई दृष्टि से देखना चाहती थी अवदमित वासना की आग बुझाने वह मार्क साहब के करीब पहुंचती है लेकिन मार्क साहब से सहमति न मिलने पर विषम परिस्थिति का शिकार बनी गिरवाला अन्ततोगत्वा आत्महत्या तो करती है, लेकिन इस आत्महत्या के द्वारा प्रचलित समाज व्यवस्था को तुच्छ करार दी गयी। दरअसल डॉ. गोस्वामी का प्रत्येक स्त्री-पात्र गुरुवात में दुर्बल, अबला, निःस्व तो नजर आती है, लेकिन उसकी अन्तर्निहित शक्ति, तेजस्विता अथवा प्रतिवादी सत्ता उसे अधिक समय तक चुप रहने नहीं देती। शोषण, वंछना के विपक्ष साहस के साथ खड़ा होने में ये लोग सक्षम हैं। डॉ. गोस्वामी ऐसी साहसी लेखिका थी, जिन्होंने समाज की रक्षणशील व्यवस्था, कुसंस्कार, अंधविश्वास में पीसती, दरिद्रता का शिकार होने वाली विधवा नारी चरित्र को अपनी चाक्षुष अभिज्ञता के आधार पर सहृदयता के साथ अंकित किया है। 'देवपीठ तेज' (देवपीठ का रक्त) शीर्षक कहानी में एक नारी द्वारा अपना प्रेम और अधिकार छीन लेने की दृढ़ता के साथ दुर्दान्त साहस और आत्मविश्वास का परिचय मिलता है कहानी के अनुसार-कामाख्याधाम के निकटवर्ती के भगवती परिवार की बेटी पद्मप्रिया से भुवनेश्वर विवाह तो करता है लेकिन पीठ पर सफेद दाग देखकर उसे धवल रोगी (कुष्ठ) समझकर परित्याग करता है। पद्म भी हार मानने वाली नहीं थी अपने रूप-सौन्दर्य के बलपर भूवनेश्वर को पुनः अपनी ओर आकृष्ट करती है। भूवनेश्वर अब निःसंकोच पद्मप्रिया के पास आने लगता है। पद्मप्रिया गर्भवती बनती है भूवनेश्वर पद्म प्रिया की पेट में पली संतान को स्वीकार करके उसे पुनः ग्रहण करने को तैयार हो जाता है। तभी पद्मप्रिया घोषणा करती है - "यह संतान भूवनेश्वर की नहीं बलि काटने की काम करने वाला शंभूदेव की है।" यहां पद्मप्रिया को व्यभिचारिणी मान लेना अनुचित होगा। अगर पुरुष अपने मन से स्त्री का परित्याग अथवा ग्रहण कर सकता है, तो स्त्री क्यों नहीं? लेखिका की अन्य एक कहानी 'उरणि' (घूंघट) में देहोपजीविनी कामिनी जब कहती है- "जानती हो ललिता मैं साधारण आदमी के जीवन को घृणा करती हूँ।" कामिनी को अपने जीवन काल में मिला तिरस्कार और कटूता का बहिर्प्रकाश मात्र है।

इंदिरा गोस्वामी की उत्तर सूरी अरूपा पटंगीया कलिता (1956) के कथा-साहित्य में भी निम्नवत् अथवा निम्न मध्यवित् समाज और उस समाज की नारियों की दशा और उस दशा का सबल प्रतिवाद का यथोचित प्रतिफलन हुआ है। अपने ही समाज, परिवार से मिली उपेक्षा उत्पीड़न का साहसिक प्रतिवाद करती स्त्रियों के जीवन को करीब से देखकर उनके प्रति उचित समर्थन भी दिया है। 'मृगनाभि' (1987) 'अयनान्त' (1994) : 'फेलानी' (2003) आदि उनके अन्यतम चर्चित उपन्यास हैं। उनके समादृत उपन्यास 'फेलानी' में कोई निश्चित कहानी न होते हुए भी समाज-वर्जित श्रेणी के दुःख-शोक को उपस्थापन करते- करते कहानी आगे बढ़ती है। फेलानी नामक स्त्री चरित्र के इर्द-गिर्द ही अन्य पात्र, उनके जीवन में घूमते हैं। अन्य स्त्री पात्र रहे हैं- काली बुढ़ी, जोन की माँ, जग्गु की पत्नी डूइवरनी, रत्ना की माँ, मीरा की माँ, मिनती, रत्ना, मीरा आदि। उपन्यास में चित्रित नारी पात्रों के विषय में डॉ. अर्चना देवी लिखती हैं- "नारी पात्रों के नामकरण से ही उनके परिचय मिलते हैं कि उनके निजस्व भाव का अभाव है। क्योंकि वे किसी की माँ, पत्नी अथवा पति के परिचय से परिचिता हैं। 'सिर पर एक मरद का हाथ चाहकर भी' मर्द खिलायेगा-पिलायेगा सोचकर बैठती नहीं है ये लोग संग्रामी सत्ता के दूसरे नाम हैं इन संग्रामी सत्ता में जब कभी प्रतिकूलता आयी है, तभी ये लोग प्रतिवादी हो उठते हैं।"³

दरअसल श्रीमती कलिता ने प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से फेलानी के केन्द्रिक नारी समाज किस प्रकार सामाजिक प्रतिकूलता को लांघकर प्रतिवादी स्वर उठाते हैं-इसको शब्दबद्ध करने का साहसी कदम उठाया है 'फेलानी' शब्द आवर्जना, कूड़ा अर्थ सूचित करता है। असम में संघटित किसी साम्प्रदायिक संघर्ष में फेलानी के पति की मृत्युपरांत फेलानी अकेली पड़ जाती है। फेलानी को भी ऐसे ही संघर्ष में फेंक दिया गया था। जीवन भर उपेक्षिता फेलानी अन्ततः काली बुढ़ी नामक स्त्री के पास आश्रय लेती है बस्ति में स्वयं को जीवन जीविका के लिए संघर्ष करती काली बुढ़ी फेलानी को जीवन पथ का संधान देती है। आँसुओं से जीवन ध्वंश न करके साहस के साथ बढ़ने की शिक्षा देती है तीखी 'मेम मिर्च' फेलाने के हाथ में थमाकर जब बुढ़िया कहती है- डालियाँ भर-भरकर सर उठाकर फलने वाली ये छोटी-छोटी सफेद मिर्च बहुत तीखी हैं। मुहँ में डालते ही आग चबाने जैसा लगता है। औरतों को भी ऐसे ही मेम मिर्च बनना चाहिए, देखने में छोटी लेकिन मुँह ज्वलाने की क्षमता रखने, वाली।" फिर काली माँ की फोटो दिखाकर कहती है - "माँ की शक्ति को देखो, पुरुष को किस प्रकार

पदाघाट किया है। माँ की भक्त बनो। शक्ति मिलेगी।" काली बुढ़ी अपने शरीर में काली माता लगने का नाटक करती है। हांलाकि यह समाज को की गयी प्रताड़ना है, फिर भी पुरुषों के हाथों लांछिता काली बुढ़ी पुरुषों के विरुद्ध जिहाद करती है। डॉ. अर्चना देवी के अनुसार—“स्वयं प्रकृति बुढ़िया प्रकृति की शक्तिशाली रूप काली माँ लगने का नाटक करके जीविका चला रही है, बिना पुरुषों की सहायता से।”⁴

फैलानी का चरित्र बड़ा ही विचित्र है। किसी समय गाँव की बहु, घर गृहस्थीवाली फेलानी समय-स्रोत में भले ही बस्ति में रहने लगी है, किन्तु बस्ति में रहकर भी जीविकोपार्जन का सहज मार्ग नहीं अपनायी। किसी को प्रताड़ना किये बिना मेहनत करती है, सत् कर्म से उपार्जन करके बेटे को पढ़ाती है। फेलानी स्वयं प्रकृति बनकर सबको समय-समय पर सहारा देती है, यथासाध्य मदद करती है। दुर्दमणीय साहस के साथ स्वयं भी जीती है और दूसरों को भी जीने की प्रेरणा देती है। लेखिका ने ‘फैलानी’ में माँ काली को प्रतीक रूप में रखकर नारी की आभ्यान्तरणीय शक्ति को ही दर्शाया है। प्रयोजन आने पर नारी काली मूर्ति धारण कर संहार करने की क्षमता रखती है। उपन्यास की अन्य एक स्त्री – पात्र मीरा पति द्वारा परित्यक्ता स्त्री है। बाद में जब उपपत्नी से ठगे जाने पर पति कमल पुनः मीरा के पास आता है, तब मीरा दरवाजा तक खोलने से इंकार करती हुई कहती है— ‘नहीं’ खोलेगी दरवाजा। तुझे घर में रहने नहीं दूँगी। यह घर मैंने बनवाया है। तू चला जा। अपनी औरत के पास चला जा.....मांस पकाओ, शराब पीओ, उसके साथ बिस्तर पर उठो.....। मर्द कहलाने आये हो नहीं चाहिए ऐसा मर्द.....मैं मँरू, मेरा बेटा मरे, तेरा क्या ?” (पृष्ठ-238) जो स्त्री अपने सिर पर मर्द की छत्र छाया की कामना करती है हजार बार उसके द्वारा तिरस्कृत होने पर भी विरोध नहीं करती है— वही अपमान की चरम सीमा तक आते-आते निर्भीक हो उठती है इस अवसर पर ‘फैलानी’ को नारी शक्ति का उद्गीरण कहें तो अत्युक्ति नहीं होगी। समीरण शङ्कीया के अनुसार “प्रकृति द्वारा पालित फेलानी चरित्र की सुधा पानकर पुरुषों के विरुद्ध जिहाद घोषणा करने वाली असमिया उपन्यासों का प्रथम स्त्रीपात्र है।”⁵

मणिकुंतला भट्टाचार्य ऐसी ही प्रसिद्ध नारीवादी लेखिका है। श्रीमती भट्टाचार्य द्वारा लिखित ‘बरदोवानी’ (बरदोवा नामक जगह की स्त्री) समाज द्वारा लांछिता-वंचिता स्त्री की कथा है अपने पति द्वारा मरणोन्मुख माँ का दिये वचन पालनार्थ संतान प्राप्ति के लिए

दूसरा विवाह किये जाने पर भी बरदोवानी परिस्थितियों को संभाल लेती है। वह जीवन के महत्व का उपलब्ध करती हुई जीवन को आगे बढ़ाती है—लेकिन अपने प्राणप्रिय पति को दूसरी स्त्री को समर्पित करने का मनोकष्ट झेलती रहती है शरीर को घिस-घिसकर घंटो भर नहाकर मानो बांझ होने का पाप धोना चाहती है एक दिन जब पति घर से खो गयी काली बुढ़ी गाय के लिए कहती है—“ऐसी अलाभकारी गाय के पीछे मत परेशान हो”— तब बरदोवानी सचेत हो उठती है और कहती है —“दूध न दे पाने के कारण ही उसको अनादर करूँगी क्या ? (पृष्ठ-30) बरदोवानी की इस उक्ति वस्तुतः उसके बांझपण के कारण उसके प्रति की गयी समाज की उपेक्षा के विरोध में विद्रोह है। बरदोवानी कांता को लेकर स्वप्न देखती है लेखिका की कलम से— “बरदोवानी की मोतियाबिंद पड़ी आँखों में कभी वह डाक्टरनी बन जाती है कभी थाने की महिला पुलिस। पुरुष पुलिस की तरह ही पोशाक पहने साहसी पुलिस। अपने पैरों पर खड़ी होने के लिए ही कांता को वह अपनी कहानी सुनाती है। उसकी द्वाती में स्वप्ना और उत्साह प्रोथित करती है (पृष्ठ 248) वस्तुतः यह उपेक्षा झेलती हुई बरदोवानी के हृदय के किसी कोने में संचित क्षोभ का ही बहिर्प्रकाश है।

प्रसिद्ध कथाकार शिवानन्द काकति अपनी कहानियों में युगीन विषय वस्तु को शब्दबद्ध करते हैं। उनकी कहानी ‘गागिनी पानी तोर किमान (1999) में परिवर्तित शहरी चकाचौंध, आर्थिक मोह के आगे मानवीयता किस तरह स्तिमित हो गयी, उसे दिखाया है। कहानी की स्त्री पात्र मेनका स्त्री के साथ पुरुषों द्वारा किये गये अमानवीय व्यवहार का मौन विरोध करती है। किसी विधवा को सामुहिक बलात्कार कर पाषंडों ने यौनांग से लाठी भरकर उसे चौराहे पर लटकाकर रखा जाने की खबर अखबार में छपी। अखबार में प्रतिदिन आर्थिक गातिविधि से जुड़े समाचार पढ़नेवाले मेनका के पति सौरभ की नजर उस दिन के इस समाचार पर पड़ी या नहीं—जानने के लिए मेनका उत्सुक थी अति मर्मांतिक घटना के बारे में सौरभ द्वारा एक भी चर्चा न करने का क्षोभ मेनका को दिनभर सताता रहा।

रात को प्रात्यहिक कर्मानुसार सौरभ प्रेम से मेनका को पास खींचता है मेनका से अब रहा नहीं गया। वह समाचार के बारे सौरभ से पूछ बैठती है लेकिन सौरभ इसे उपेक्षा कर अपनी वासनासिद्धि के लिए ही तत्पर होता है अब मेनका का स्त्री-अहं जागृत हो उठता है। उसके शरीर को टटोलने को बढ़ा सौरभ का हाथ जोर से झटक कर मानो मेनका सम्पूर्ण नारी सत्ता की ओर से प्रतिवाद

करती है। श्री काकति की अन्य एक उपन्यासिका 'कुशंडी' (2009) में विधवा स्त्री तरु की कथा है। गाँववालों की प्रताड़ना, पुरुषों की लुलुप दृष्टि उसका अकेलापन, आर्थिक दैन्यता के बहाने उसके शरीर को उपभोगता करने आये लोगों से परेशान तरु के मन में एक उदासीन पुरुष बलि के प्रति 'अहेतुक माया' उपजती है- और अन्ततः उस बलि की चिता में आत्मजाह देकर एक प्रकार से भण्ड समाज के प्रति ताच्छिल्य कर गयी।

इस प्रकार हम देखते हैं कि समकालीन असमिया कथा साहित्य में स्त्री समाज पर हो रहे अमानवीय शोषण, नारियों के संत्रास और सभी वर्गों में नारी पराधीनता का बड़ा मार्मिक चित्रण किया गया है स्त्री- विमर्श की अनिवार्य शर्त है स्त्री के अस्तित्व की वास्तविक पहचान। अपनी अलग पहचान न बना पाने का दुःख, अपार-असीम शक्ति होते हुए भी समाज में सम-भागीदार न बन पाने का क्षोभ अथवा सदियों से पुरुषों की कामना-वासना की पूर्ति की जरिया मात्र माने जाने की त्रासदी तथा इनसे मुक्ति पाने की छटपटाहट में उलझी स्त्री समाज को नया आयाम देने का प्रयास साहित्यकार अविराम कर रहे हैं। असमिया महिला कथाकारों के साथ- साथ पुरुष कथाकारों ने भी स्त्रियों की बदलती तस्वीर तथा सामाजिक समस्याओं को अभिव्यक्ति प्रदान कर रहे हैं। आवश्यकता इस बात की है कि समाज सकारात्मक भाव से उनपर विमर्श करें और यथासाध्य ग्रहण करके एक द्वन्द्वहीन, संस्कारयुक्त समाज की प्रतिष्ठा करें। □□□

बैंक कॉलोनी नं.2 उत्तर हैबरगांव नगांव (असम) . 782002
फोन नं. 9435784451e-mail- manikasaikia
6600@gmail.com

संदर्भ संकेत

1. हिन्दी शब्द कोश, सम्पादक नगेन्द्रनाथ ठाकुर , पृ.478
2. 'अनुसंधान' पत्रिम में प्रकाशित 'समकालीन कथा साहित्य में स्त्री- विमर्श' , पृष्ठ-64 जुलाई -3013
3. 'गरीमसी' पत्रिका, जनवरी 2017, पृष्ठ28
4. वही पृष्ठ वही
5. 'गरीमसी' पत्रिका में प्रकाशित समीरण शइकीया का निबंध 'संक्षिप्तर' उपन्यास फेलानी ' मार्च 2011, पृष्ठ 42

श्री नाथजी का खजाना

□कमलकिशोर शर्मा□

बाबा देने वाले हैं, हम लेनेवाले हैं
आज खाली हाथ नहीं जाना
बाबा बैठे हैं खोल के खजाना

जिसे चाहिये वो हाथ उठाना
बाबा बैठे हैं खोल के खजाना।

दरबार सजा है मेरे श्री नाथ का
बाबा का है जग रखवाले का

तुम भर लो जी प्यार का पैमाना
बाबा बैठे हैं खोल के खजाना

दानी नहीं है इसके जैसा
मिलता यहां हीरा मोती पैसा

जरा दिल से आवाज लगाना
बाबा बैठे हैं खोल के खजाना

देनेवाले हैं वो और मांगता जमाना
भक्तों मांगने से मत शर्माना, शर्माना

शर्मा हूँ मैं शर्माता नहीं
मांगने से मैं घबराता नहीं

मैं गा रहा तुम ताली बजाना
बाबा बैठे हैं खोल के खजाना

जिसे चाहिये वो हाथ उठाना
बाबा बैठे हैं खोल के खजाना

कपड़ा लाइन वर्धा (महा0)